आत्म-विवरण

डॉ. वाचस्पति मिश्र

व्यक्तिगत सूचनाएं :

नाम	:	वाचस्पति मिश्र
पितृनाम	:	स्व. डॉ. सत्यप्रिय शास्त्री
जन्मतिथि	:	19 जुलाई 1972
वैवाहिक स्थिति	:	विवाहित
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
कार्यालय	:	A -1589, इन्दिरानगर, लखनऊ - 226016 (उ.प्र.)
गृहनिवास	:	54/4 जागृति विहार, मेडिकल, मेरठ - 250004 (उ.प्र.)
दूरभाष्य	:	09319002402

1. राजकीय विद्वत्-निकायों में भूमिका (Role in State Academic Bodies) p. 2
2. कुशाग्र प्रबंधन व कुशल प्रशासनिक क्षमता (Smart Management and Efficient Administrative Ability) p. 2
3. शैक्षणिक व अनुसंधान अनुभव (Academic And Research Experience) p. 2
4. शोध अनुसंधान कार्य (Research Work) p. 3
5. शैक्षिक विवरण (Educational Details) p. 3
6. विशिष्ट अध्ययन (Specific Studies) p. 3
7. संस्कृत के लिये आन्दोलन/सत्याग्रह (Movement/Satyagraha for Sanskrit) p. 3
8. दायित्व निर्वहन - उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष के रूप में सितम्बर 2017 से अधुनावधि p. 4
9. दायित्व निर्वहन - संस्कृत भारती मेरठ में प्रान्त अध्यक्ष के रूप में। p. 5
10. दायित्व निर्वहन - वर्ष 1996 से गुरुकुल प्रभात आश्रम (महाविद्यालय) के महामंत्री के रूप में p. 6
11. दायित्व निर्वहन - स्वामी समर्पणानंद वैदिक शोध संस्थान के सचिव के रूप में p. 7
12. दायित्व निर्वहन - वर्णाश्रम संघ सार्वजनिक धमार्थ न्यास में प्रभारी के रूप में p. 7
13. संस्कृत शिक्षण एवं अनुसन्धान में नवोन्मेषी विचार p. 8

1. राजकीय विद्वत्-निकायों में भूमिका (Role in State Academic Bodies)

अध्यक्ष	- उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ (उ.प्र. शासन द्वारा नामित)	सित. 2017 से सतत
सदस्य	- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उ.प्र. में क्रियान्वयन हेतु टास्क फोर्स	अगस्त 2020
सदस्य	- संस्कृत-शिक्षा-उन्नयन एवं संस्कृत-शिक्षकों की समस्याओं के समाधान हेतु समिति (संस्कृत शिक्षा अनुभाग, माध्यमिक शिक्षा, उ.प्र. शासन)	जुलाई 2018
आमन्त्रित सदस्य	- उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, लखनऊ	2018 से सतत
समन्वयक	- उ.प्र. में संस्कृत भाषा के विकास हेतु बृहद् योजना हेतु समिति (भाषा विभाग, उ.प्र. शासन द्वारा)	अक्टू. 2019
मनोनीत आमंत्रित	- वैदिक संस्कृत बोर्ड विषयक अधिवेशन (मानव संसाधन विकास मन्त्रालय)	जन. 2016
आमंत्रित सदस्य	- संस्कृत विषयक BOS, RDC, DRC - चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ	
सदस्य	- उ.प्र. संस्कृत संस्थान, लखनऊ (माननीय राज्यपाल जी द्वारा नामित)	अगस्त 2002
सदस्य	- उत्तराखण्ड संस्कृत एकाडेमी, हरिद्वार (शासन द्वारा मनोनीत)	मई 2008
अध्यक्ष	- अखिल भारतीय संस्कृत शोध सम्मेलन (उत्तराखंड संस्कृत एकाडेमी)	फर. 2009
संयोजक	- विश्व वेद सम्मेलन (गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., हरिद्वार)	नव. 2009

2. कुशाग्र प्रबंधन व कुशल प्रशासनिक क्षमता

(Smart Management and Efficient Administrative Ability)

अध्यक्ष	- संस्कृतभारती न्यास, मेरठ प्रान्त (पश्चिमी उत्तर प्रदेश)
महामंत्री	- गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल, मेरठ
सचिव	- स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान, मेरठ
प्रभारी	- वर्णाश्रम संघ सार्वजनिक धर्मार्थ न्यास, मेरठ

3. शैक्षणिक व अनुसन्धान अनुभव (Academic And Research Experience)

शास्त्र अध्यापन	- गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ में	11 वर्ष
शिक्षण (UG, PG)	- संस्कृत विभाग, मेरठ कॉलिज मेरठ में	25 वर्षों से सतत
समन्वयक	- संस्कृत प्राच्य भाषा एवं योग विभाग, चौ. चरणसिंह विवि. मेरठ	2019

4. शोध अनुसंधान कार्य (Research Work)

ग्रन्थ प्रकाशन	- 4 शोध ग्रन्थों का प्रकाशन
पत्र प्रकाशन	- मानक शोध पत्रिकाओं में 13 शोध पत्रों का प्रकाशन
पत्र वाचन	- विभिन्न शोध आयोजनों में प्रायः 30 शोधपत्र वाचन
पत्रिका सम्पादन	- वैदिकशोधपत्रिका पावमानी का 1987 से अद्यावधि प्रबन्ध सम्पादन/प्रकाशन
संपादन/प्रकाशन	- प्राय: 50 वैदिक शोध ग्रंथों, लघु पुस्तिकाओं एवं स्मारिकाओं का सम्पादन/प्रकाशन
मार्गदर्शन	- एम.फिल. व पीएच.डी. के शोध छात्रों को शोध उपाधि के लिए मार्गदर्शन
संगोष्ठी आयोजन	- वर्ष में 2 बार अन्तरराष्ट्रीय/अखिलभारतीय वैदिक शोध संगोष्ठियों का आयोजन

5. शैक्षिक विवरण (Educational Details)

पीएच.डी. (विद्यावाचस्पति)	- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	
एम.फिल. (दर्शन निष्णात)	- दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	विशेष योग्यता सहित
एम.ए. (वैदिक साहित्य)	- गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., हरिद्वार	स्वर्ण पदक
स्नातकोत्तर (आचार्य)	- राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली	सर्वप्रथम
बी.ए. ऑनर्स (शास्त्री)	- म.द. विश्वविद्यालय, रोहतक	सर्वप्रथम
उत्तर मध्यमा	- म.द. विश्वविद्यालय, रोहतक	सर्वप्रथम
पूर्व मध्यमा	- श्रीमद्दयानन्दार्ष वि.पीठ, रोहतक	सर्वप्रथम

6. विशिष्ट अध्ययन (Specific Studies)

निगमालङ्कार - गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ में प्राचीन परम्परा के अनुसार संस्कृत व्याकरण एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन उपरांत प्रदत्त उपाधि

7. संस्कृत के लिये आन्दोलन/सत्याग्रह (Movement/Satyagraha for Sanskrit)

- राज्यपाल टी. राजेश्वर की संस्कृत के विरुद्ध टिप्पणी करने के विरोध में मेरठ महानगर में अभूतपूर्व प्रदर्शन। (2007)
- चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ में संस्कृत विभाग को बन्द करने का सफल प्रतिरोध, फलस्वरूप विभाग बन्द नहीं हुआ। (2011)
- डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा में संस्कृत विभाग को बन्द करने का सफल प्रतिरोध, फलस्वरूप विभाग बन्द नहीं हुआ। (2012)

8. दायित्व निर्वहन (Bearing the Responsibility) -

उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान के अध्यक्ष के रूप में सितम्बर 2017 से अधुनावधि

- नि:शुल्क ऑनलाईन सरल संस्कृत संभाषण सीखने हेतु न०-9522340003 पर मिस्ड कॉल द्वारा पञ्जीकरण।
- सरल संस्कृत संभाषण हेतु संस्कृत संवादशाला (पञ्चदश दिवसीय आवास एवं भोजन व्यवस्था के साथ)।
- प्रत्येक ब्लॉक में छोटे बच्चों में संस्कृत एवं संस्कृति के प्रति अभिरुचि जागरण हेतु चुन्नू-मुन्नू संस्कारशाला एवं सामान्य जन में संस्कृत अनुराग प्रदीप्त करने हेतु संस्कृत-दीपालय का संचालन।
- संस्कृत लेकर IAS आदि प्रशासनिक सेवा/प्रतियोगिता परीक्षाओं हेतु सघन अनुशिक्षण (Coaching)।
- संस्कृत विद्यालयों के आधुनिकीकरण/विकास हेतु पुस्तकालय, कम्प्यूटर अनुदान, संस्कृत ई-अध्ययन सामग्री निर्माण, संस्कृत शिक्षकों व छात्रों को कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं मेधावी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति।
- SCERT/संस्कृत वि.वि. के संयुक्त तत्त्वावधान में शिक्षकों का प्रगत/ पुनश्चर्या/ अभिविन्यास कार्यक्रम।
- योग शिक्षा पर बल देने हेतु समस्त जनपदों में योग केन्द्र की स्थापना।
- सभी जनपदों में पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर व सभी मण्डलों में ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर।
- संस्कृत रङ्गमञ्च का प्रायोगिक प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन।
- बीसवीं शती की उत्तरप्रदेशीय विद्वत् परम्परा का शोध-सर्वेक्षण।
- कवि-सम्मेलन, संगोष्ठी-व्याख्यान, कार्यशाला, छात्र-प्रतिस्पर्धा, शास्त्रार्थ व ग्रन्थ प्रकाशन हेतु अनुदान।
- वार्षिक उत्सवों के अर्न्तगत गुरुपूर्णिमा (सेवानिवृत्त शिक्षकों का सम्मान कार्यक्रम), योग दिवस तथा संस्कृत दिवस/ सप्ताह समारोहों का भव्य आयोजन।
- विद्यार्थियों में संस्कृत ज्ञान बढ़ाने के लिए विभिन्न शास्त्रीय/आधुनिक स्पर्धाओं का आयोजन।
- संस्कृत बाल पत्रिका बाल-संस्कृतम् का शुभारम्भ तथा समर्पणानन्द-समग्र एवं वासुदेव-द्विवेदी-शास्त्री-समग्र का प्रकाशन।
- मेरठ में संस्कृत भारती के अखिल भारतीय उपवेशन का सफल संयोजन (नव. 2021)
- उ.प्र. माध्यमिक संस्कृत शिक्षा परिषद्, लखनऊ संस्कृत पाठशालाओं का पाठ्यक्रम नवनिर्माण।

9. दायित्व निर्वहन (Bearing the Responsibility) -

संस्कृत भारती मेरठ में प्रान्त अध्यक्ष के रूप में।

- **असम एवं अरुणांचल प्रदेश में संस्कृत प्रचार हेतु एक मास का प्रवास (जुलाई 2006)**
- **मेरठ में संस्कृत भारती के अखिल भारतीय अधिवेशन का सफल संयोजन (अक्टू 2007)**
- समस्त भारत में संस्कृत के प्रचार-प्रसार करने व आम जनता में संस्कृत के प्रति रुचि संवर्धन हेतु मेरठ में एक विशाल अखिल भारतीय संस्कृत सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें भारत के सम्पूर्ण राज्यों से विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, आचार्य, प्राध्यापक एवं संस्कृत मनीषियों ने सपरिवार भाग लिया।

संस्कृत बाल केंद्रों का संचालन -

- क्षेत्र में संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए संस्कृत बाल केंद्रों का संचालन किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न जातियों एवं सभी धर्मों के बच्चे निशुल्क संस्कृत शिक्षा एवं संस्कार ग्रहण करते रहे हैं। भारत की प्राचीनतम सांस्कृतिक विरासत एवं साहित्यिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए पूरे पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 15 बाल केंद्र चलाए जा रहे थे। भारतीय संस्कृति एवं सभी भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा से प्रभावित होकर मुस्लिम समाज सहित सिख एवं अन्य धर्मावलंबी बच्चे भी इन बाल केंद्रों में संस्कृत का ज्ञान ग्रहण करने के लिए आ चुके हैं. उल्लेखनीय है कि इनमें से अनेक केंद्रों की शिक्षिकाएं मुस्लिम रही हैं।

आवासीय संस्कृत शिक्षण शिविर का आयोजन -

- उत्तर भारत में प्रत्येक वर्ष 10 दिवसीय आवासीय संस्कृत शिविरों के आयोजन द्वारा क्षेत्र के स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थियों में संस्कृत संभाषण, लेखन एवं प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं के लिए क्षमता का विकास कराना। संस्कृत संभाषण शिविर का आयोजन उत्तर भारत के जैन मंदिरों, आर्य समाज मंदिरों और महाविद्यालयों तथा दलित बस्तियों में संस्कृत संभाषण शिविरो द्वारा संस्कृत संभाषण का अभ्यास के साथ साथ भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत वाङ्मय के प्रति सर्व समाज में जागरूकता पैदा करना।

अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केंद्र का संचालन -

- संस्कृत संभाषण शिविर एवं आवासीय संस्कृत शिक्षण शिविरों में शिक्षा ग्रहण कर चुके शिक्षार्थियों के प्रगत संस्कृत शिक्षण हेतु त्रैमासिक अनौपचारिक संस्कृत शिक्षण केंद्रों का संयोजन करना।

ज्ञान-विज्ञान संस्कृत प्रदर्शनियों का आयोजन -

- पश्चिम उ.प्र. के विद्यालयों/महाविद्यालयों में प्राचीन भारतीय ज्ञान-संपदा एवं संस्कृत साहित्य में निबद्ध शोध निष्कर्षों के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं नागरिकों को परिचित कराने के लिए ज्ञान-विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन।

10. दायित्व निर्वहन (Bearing the Responsibility) -

गुरुकुल प्रभात आश्रम (महाविद्यालय) के महामंत्री के रूप में वर्ष 1996 से अधुनावधि।

- महाविद्यालय में (सरकारी अनुदान के बिना) आवर्ष विद्यार्थियों हेतु निःशुल्क भोजन व्यय का प्रबंध।
- निःशुल्क आवास एवं शिक्षा के साथ-साथ वैश्विक ज्ञान परिदृश्य से जोड़ने हेतु कंप्यूटर लैब की स्थापना।
- पत्रकारिता के प्राथमिक प्रशिक्षण हेतु आवश्यक उपकरणों एवं डिजीटल वीडियो कैमरे एवं स्टिल कैमरे की समुचित व्यवस्था।
- विश्व में वैदिक ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु एक पोर्टल (निर्माणाधीन) - जिससे देश-विदेश के जिज्ञासुओं को सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय एवं प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक विरासत से सम्बधित जिज्ञासाओं के समाधान का अवसर प्राप्त हो सके। संस्कृत वाङ्मय के दुर्लभ ग्रन्थों के डिजीटल संस्करण वेबसाईट पर उपलब्ध कराने की योजना।
- धमार्थ औषधालय की स्थापना - जिसमें विद्यार्थियों के साथ-साथ क्षेत्र के ग्रामीण अंचल में रहने वाले लोगों को निःशुल्क परामर्श एवं निःशुल्क औषधियाँ प्रदान की जाती हैं।
- विद्यार्थियों की ज्ञान-पिपासा के शमन हेतु पुस्तकालय का विस्तार एवं कम्प्यूटरीकरण।
- नवसम्वत्सर के अवसर पर प्रतिवर्ष विशाल सांस्कृतिक शिविर का आयोजन। शिविर में सहस्राधिक नागरिकों में भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा के प्रति जागरूकता अभियान का आयोजन।
- इस सर्वथा निःशुल्क आवासीय शिक्षण संस्थान में प्राय: १०० ब्रह्मचारी कक्षा ६ से शास्त्री-कक्षा-पर्यन्त वैदिक परम्परा से संस्कृत व वेदादि शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन करते हैं। इस संस्था के विद्यार्थी देश के १२ विश्वविद्यालयों, २३ महाविद्यालयों, ७४ विद्यालयों, १४ सेना, ६ भारतीय खेल प्राधिकरण एवं ३ भारतीय रेल सहित अनेक सर्वकारीय संस्थाओं में उच्चपदों पर कार्यरत हैं। यहाँ के विद्यार्थियों ने स्नातक व परास्नातक कक्षाओं में २१ स्वर्णपदक प्राप्त किये हैं तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा आयोजित होने वाली NET/JRF परीक्षा में ७३ छात्रों ने सफलता प्राप्त की है।
- आश्रम परिसर में धनुर्विद्या की शिक्षा भी प्रदान की जाती है। यहाँ के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में ४७३ पदक प्राप्त कर तथा २००४ ओलम्पिक में भाग ग्रहण कर राष्ट्र को गौरवान्वित किया है।

संस्कृत के परम्परागत पाठ्यक्रम निर्माण में भूमिका -

- श्रीमद् दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, गुरुकुल झज्जर, रोहतक (आर्ष गुरुकुलों का पाठ्यक्रम) जनवरी 1992
- गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., हरिद्वार (आर्ष गुरुकुलों का पाठ्यक्रम) अप्रैल 1992
- गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., हरिद्वार (आर्ष गुरुकुलों का पाठ्यक्रम) अप्रैल 1994

11. दायित्व निर्वहन (Bearing the Responsibility) -
स्वामी समर्पणानंद वैदिक शोध संस्थान के सचिव के रूप में -

- यह शोध संस्थान 1985 से लगातार वर्ष में दो बार 13 जनवरी एवं श्रावण शुक्ल एकादशी (अगस्त) को विभिन्न समसामायिक विषयों पर वैदिक संदर्भ में शोध गोष्ठियों का आयोजन करता है। जिसमें विभिन्न विश्वविद्यालयों के सम्मानित विद्वान प्राध्यापक भाग लेते हैं। इन शोधपत्रों को वर्ष में चार बार प्रकाशित होने वाली त्रैमासिक शोध पत्रिका पावमानी में प्रकाशित किया जाता है। उल्लेखनीय है कि अनेक वैदिक शोध ग्रंथों एवं लघु पुस्तिकाओं एवं स्मारिकाओं का प्रकाशन वैदिक शोध संस्थान के अंतर्गत हो चुका है।

पावमानी (त्रैमासिक शोध पत्रिका) का प्रकाशन

- स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान की पावमानी (त्रैमासिक शोध पत्रिका) का 1987 से अद्यावधि प्रबंध सम्पादक एवं वर्तमान में सम्पादक के रूप में प्रकाशन। वैदिक गवेषकों में लोकप्रिय इस शोध पत्रिका में समसामयिक विषयों पर वैदिक विद्वानों के शोध लेखों का ससन्दर्भ प्रकाशन किया जाता है।

12. दायित्व निर्वहन -
वर्णाश्रम संघ सार्वजनिक धमार्थ न्यास में प्रभारी के रूप में महती भूमिका

- जब तक ग्रामीण अञ्चल के अन्तिम युवा की पहुँच विश्वस्तरीय शिक्षण संस्थान तक नहीं होती तब तक अन्त्योदय की कल्पना चरितार्थ नहीं हो सकती अत: परम पूज्य स्वामी विवेकानंद सरस्वती जी महाराज (कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम) की प्रेरणा व आशीर्वाद से सन् 2000 ई. में "गुरुकुल नवप्रभात वैदिक विद्यापीठ" की स्थापना का भागीरथ प्रयास ओड़िशा के बरगढ़ जिले में किया गया। पूज्य स्वामी जी महाराज का संकल्प था कि जब तक विशाल विश्वविद्यालय बनाने के लिए 100 एकड़ भूमि की व्यवस्था नहीं कर होती तब तक वे इस गुरुकुल में नहीं पधारेंगे। इतने विशाल भूमि क्षेत्र व अन्य संसाधनों हेतु प्रभूत धनराशि की व्यवस्था साधारण कार्य नहीं था पुनरपि यह कार्य सम्पन्न हुआ, निश्चित ही भगवान् जगन्नाथ की असीम कृपा, परम पूज्य स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद से वर्णाश्रम संघ सार्वजनिक धमार्थ न्यास में प्रभारी के रूप में सौ एकड़ भूमि की व्यवस्था करने में अद्भुत सफलता प्राप्त हुई।
- न्यास के अन्तर्गत मृत्युञ्जय लोक के नाम से चिकित्सालय का संचालन एवं अन्नपूर्णानिधि के रूप में छात्रों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करना।

13. संस्कृत शिक्षण एवं अनुसन्धान में नवोन्मेषी विचार -

(क) संस्कृत शिक्षण में नवाचार -

बौद्धिक जगत में संस्कृत वाङ्मय की तीन रुपों में मान्यता है।

- प्रथम - ज्ञान के स्रोत के रूप में
- द्वितीय - संस्कृत एक विषय के रूप में
- तृतीय - संस्कृत एक भाषा के रूप में

लक्ष्य -

- प्रत्येक शिक्षार्थी को चरणबद्ध संस्कृत के प्रत्येक रूप से शैक्षिक-कौशल एवं शोध-नैपुण्य अधिगत करा उसके द्वारा समाज को अधिकतम लाभान्वित करने का प्रयास करना।
- विद्यार्थियों में संस्कृत के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करते हुए अन्तर्जाल में विकसित होती संस्कृत संबद्ध ज्ञान सामग्री से परिचय कराना।
- पाठ्यक्रम के साथ ही प्रतियोगिता परीक्षाओं के प्रति भी छात्रों में उत्सुकता एवं लगन उत्पन्न करना।
- विद्यार्थियों को उनकी न्यूनताओं एवं विशेषताओं से परिचित कराते हुए उनमें व्यवसायिक, विषयगत एवं भाषिक कौशल समृद्ध करना।
- विद्यार्थियों को शोध-अध्ययन की शैली अवगत कराते हुए उनमें अनुसन्धान क्षमता विकसित करना।

(ख) संस्कृत अनुसन्धान में नवाचार -

- विविधता के साथ-साथ अनेक विषयों को समेटे हुए मानविकी एवं वैज्ञानिक विशाल साहित्य संस्कृत में उपलब्ध है। अध्ययन-अध्यापन की अपनी शब्दावली व नियमावली होती है। आधुनिक समय में भी विज्ञान अध्येता को उस शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। इसी प्रकार प्राचीन विज्ञान जो संस्कृत में अभिव्यक्त हुआ है उस में निहित कूट शब्दों को अनावृत करना पड़ेगा। इस सब की समझ विकसित करते हुए शिक्षा जगत् में सकारात्मक वातावरण तैयार करना होगा और ऐसे प्रकल्पों को क्रियान्वित करना होगा जिससे संस्कृत के अन्तर्वैषयिक सम्बन्धों को पुनः स्थापित किया जा सके।

संस्कृत में अनुसन्धान के विशिष्ट आयाम हो सकते हैं।

- **प्रथम** -भाषावैज्ञानिक अध्ययन, जिसके माध्यम से संस्कृत के वैश्विक भाषाओं से जन्य-जननीत्व (?) सम्बन्ध को सिद्ध करना।
- **द्वितीय** - संस्कृत में निहित (प्रकाशित/पाण्डुलिपिगत) ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित अनेक विषयों को गवेषित कर विद्यार्थियों एवं जिज्ञासु सामाजिक-जनों को परिचित कराना।
- **तृतीय** - संस्कृत-वाङ्मय में प्रस्फुटित नैतिक तत्त्वों जैसे- चरित्र निर्माण, सर्वकल्याण भावना, विश्वबन्धुत्व, अध्यात्म आदि का अनुसन्धान करना तथा इन तीनों आयामों के व्यापक प्रचार द्वारा अस्तित्व के संकट से जूझती संस्कृत भाषा को विश्वपटल पर पुन: स्थापित कराने का प्रयास।